ISSN- 2454-2695

साहित्य संहिता

Available at http://www.sahityasamhita.org/

Volume 01 Issue 11

December 2015

# महादेवी वर्मा की गद्य शैली : 'पथ के साथी' के संदर्भ में

**प्रदीप कुमार**
एम.ए., एम.फिल एवं नेट (हिन्दी)
गांवः ईसरहेड़ी, जिलाः झज्जर (हरि0)

**शोध–आलेख सारः** संस्मरण हिंदी गद्य की आधुनिक विधा है। जीवनी परक साहित्य का यह अत्यंत ललित एवं लघु कलात्मक अंग है। जीवन की अभिव्यक्ति का यह रूप स्मरण पर आधारित होता है। भारतीय काव्य शास्त्र में स्मरण अलंकार रूप में चिरकाल से प्रयुक्त होता रहा है। जिस प्रकार चित्रकार रेखाओं और रंगों के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति सरलता से कर देता है। उसी प्रकार रेखाचित्रकार भी कुछ चुने हुए शब्दों या रेखाओं द्वारा अपनी भावना की वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ या जीव का चित्र प्रस्तुत करता है।

**मूलशब्दः** छायावाद, रेखाचित्र, अलंकार, चित्रकार, भावना, संस्मरण।

**भूमिकाः** छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भों में से एक महादेवी वर्मा अपनी करूण–भावना के कारण 'आधुनिक युग की मीरा' कही जाती है। मुख्य रूप से तो वे कवयित्री हैं लेकिन उन्होंने गद्य साहित्य में भी उतने ही आत्मीय ढंग से रचनाएँ की हैं, जितना की पद्य में। उनके काव्य संग्रह नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934) आदि हैं, और गद्य साहित्य में 'अतीत के चलचित्र (1941), 'स्मृति की रेखाएँ' (1943) 'पथ के साथी' (1956), 'मेरा परिवार' (1972) तथा निबंध 'श्रृंखला की कड़ियाँ' (1942), 'क्षणदा' (1956) आदि रचनाएँ हैं।

शब्दों द्वारा बनाए हुए ऐसे सुसंगठित चित्र को रेखाचित्र या शब्द चित्र कहते हैं। रेखाचित्र आकार में छोटा होने पर भी अपनी विशिष्टताओं के कारण उसमें किसी व्यक्ति या घटना को अत्यधिक मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित किया जा

ISSN- 2454-2695
Volume 01 Issue 11
December 2015

सकता है। रेखाचित्र को परिभाषित करते हुए कह सकते हैं कि 'किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का कम से कम शब्दों में भावपूर्ण एवं सजीव रूप में प्रस्तुतिकरण ही रेखाचित्र है।'

महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में संस्मरण और रेखाचित्र का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके संस्मरणों में रेखाचित्र भी समाहित हो जाता है क्योंकि इन दोनों में कुछ खास अंतर नहीं होता है। वे खुद इस बात को स्वीकारते हुए लिखती हैं–

''संस्मरण और रेखाचित्रों में विभाजक रेखा इतनी सूक्ष्म रहती है कि एक दूसरे में समाहित हो जाना स्वाभाविक है।''

महादेवी वर्मा गद्य साहित्य की अप्रियतम कलाकार हैं। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', और 'मेरा परिवार' आदि उनके संस्मरणात्मक गद्य संग्रह हैं। उन्होंने संस्मरणों में सामाजिक वैमनस्य, एवं नारी हृदय की करुण वेदना, व्यथा का बहुत ही मर्मस्पर्शी बौद्धिक विश्लेषण किया है। सिर्फ मनुष्य ही नहीं, बल्कि उसके इतर अन्य प्राणियों के प्रति भी जितनी आत्मीयता से वर्णन करती हैं वह अन्य के यहाँ दुर्लभ ही जान पड़ता है।

''पशु–पक्षियों के साथ प्रतिदिन के क्रीड़ा–कौतुक को साहित्यिक रूप देकर महादेवी ने उदाहरणीय कार्य किया है। पशु–पक्षियों के प्रति सहानुभूति का सागर कवयित्री हृदय में उमड़ पड़ता है।''

'पथ के साथी' में महादेवी वर्मा ने अपने समकालीन और साथी साहित्यकारों, जिनसे उनका आत्मीय संबंध था। उनके साथ बिताए गए समय और अनुभवों को उन्होंने संस्मरण के रूप में प्रस्तुत किया है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला',

जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत तथा सियारामशरण गुप्त के व्यक्तित्व और उनके जीवन परिचय के अतिरिक्त उनकी साहित्यिक प्रतिभा पर भी प्रकाश डाला हैं। वे 'पथ के साथी' की शुरूआत रवीन्द्रनाथ ठाकुर से करती हैं और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के विभिन्न परिवेशों से उत्पन्न अनुभूतियों की अभिव्यक्ति देती है। वहीं मैथिलीशरण गुप्त के बारे में वे लिखती हैं–

''मैं गुप्त जी को कब से जानती हूँ, इस सीधे से प्रश्न का मुझसे आज तक कोई सीधा सा उत्तर नहीं बन पड़ा।''

महादेवी वर्मा अपने साहित्यिक जीवन में दूसरा स्थान सुभद्राकुमारी चौहान को देती हैं। उनसे इनका परिचय स्कूल में हुआ था। निराला से संबंधित महादेवी वर्मा की स्मृति की रेखाएं व्यथा से गीली है। एकाकी और व्यथित जीवन बिताने वाले निराला के साथ उनका संबंध भाई जैसा था। उनके अस्त–व्यस्त जीवन को व्यवस्थित करने की असफल प्रयासों को याद करके लिखती हैं–

''उन्हें व्यवस्थित करने के सभी प्रयास निष्फल रहे हैं, पर आज मुझे उसका खेद नहीं है। यदि वे हमारे कल्पित सांचे में समा जावें तो। उनकी विशेषता ही क्या रहे?''

जयशंकर प्रसाद के बारे में बताते हुए कहती हैं कि मैं उनसे सिर्फ एक बार ही मिल सकी। प्रसाद के साहित्य और उनके संबंध में प्रचलित विचारों और कथाओं की पृष्ठभूमि में महादेवी उनकी स्मृति अंकित करती हैं, तो वहीं सुमित्रानन्दन पंत के बारे में वे लिखती हैं,

''सुभद्रा जी के उपरांत मेरे दूसरे परिचित कविबन्धु सुमित्रानन्दन जी ही हैं।''

सुमित्रानन्दन पंत से उनकी मुलाकात एक कवि सम्मेलन में हुई थी। गाँधीवादी कवि सियारामशरण गुप्त से महादेवी वर्मा का संबंध कुछ ऐसा था कि उनको गुप्त की जीजी का स्थान प्राप्त था। पथ के इन साथियों के साथ वे अपने अपने व्यक्तित्व को भी जोड़कर देखती हैं और लिखती हैं–

''अपने अग्रजों और सहयोगियों के संबंध में अपने आपको दूर रखकर कुछ कहना सहज नहीं होता।''

रेखाचित्र में शैली का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। शब्दों द्वारा किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का चित्र चित्रित करने के लिए शैली का प्रभावशाली होना बहुत ही आवश्यक है। शैली के क्षेत्र में महादेवी वर्मा प्रयोगधर्मी हैं। शैली चयन में वे कहीं भी धोखा नहीं खाती हैं। उनके रेखाचित्रों की सफलता एवं लोकप्रियता का रहस्य भी उनकी सरल, सुबोध एवं सहज गद्य शैली है जो उनके कवि हृदय की भावुकता और संवेदनशीलता ग्रहण कर अत्यंत मनोरम बन जाती है। हिन्दी गद्य साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान काव्य में कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं है।

''उनकी प्रतिभा पद्य तथा गद्य दोनों में समाहित थी। लेकिन आपका पद्य आत्मकेन्द्रित हैं तो गद्य समाज केन्द्रित। कविता में उन्होंने अध्यात्म की बातें की है। तो गद्य में सामान्य जन–जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।''

अनुभूत भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से ही संभव है। भाषा मानव मुख से निःसृत भाव संप्रेषण का साधन है जो व्यक्ति और समाज

को जोड़ने का काम करती है। भाषा भावों की संवाहिका है। भाषा से ही भावों और विचारों का प्रस्फूटन और प्रसारण होता है। जहाँ तक महादेवी वर्मा की भाषा का सवाल है तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उनकी भाषा के बारे में लिखा है–

''न तो भाषा का ऐसा स्निग्ध और प्रांजल–प्रवाह और कहीं मिलता है, न हृदय की ऐसी भावभंगी।''

महादेवी वर्मा की भाषा परिनिष्ठित, सुसंस्कृत एवं परिमार्जित है। अभिव्यक्ति के लिए कृतिकार के पास जितनी कल्पना, भावुकता और सजीवता अथवा भाषा चमत्कार होना चाहिए, वह सब महादेवी में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। भाषा उनकी अनुभूति, चिंतन और कला चेतना की संश्लिष्ट मर्यादा को सुरक्षित रखने में पूर्ण समर्थ हैं। चूँकि महादेवी संस्कृत की प्रकाण्ड पंडिता हैं अतः भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता दिखाई देती है। यथा –

''एक युग बीत जाने पर भी मेरी स्मृति से एक घटा भरी अश्रुन्मुखी सावनी पूर्णिमा की रेखाएं नहीं मिट सकी है।''

इनकी भाषा में अधिकांशतः इसी प्रकार के प्रयोग दिखाई देते हैं। इससे उनकी भाषा की अभिव्यंजना शैली प्रौढ़ हुई है लेकिन भाषा को सजीव रूप प्रदान करने के लिए कहीं–कहीं तद्भव, देशज, और विदेशी शब्दों का भी प्रयोग देखने को मिलता है। देशज भाषा देंखे, जैसे –''ऊ सहोदरा विचरि अऊ तो इनका देखै बरे आइ के अकेली सूनी घर माँ बैठी हैं। अऊर इनका कितबियन से फुरसत नहिन बा।''

शब्द चयन की तरह ही उनका वाक्य विन्यास भी बड़ा सुलझा हुआ है। वाक्य बड़े आकर्षक और सुबोध हैं। शब्द चयन में जिस प्रकार तत्सम शब्दावली की बहुलता है उसी प्रकार संक्षिप्त वाक्य रचना की अपेक्षा दीर्घ वाक्य योजना की भी विशेष प्रवृत्ति इनके यहाँ दिखाई देती है। दीर्घ वाक्य अस्पष्ट और क्लिष्ट नहीं बल्कि सुबोध और आकर्षक है। उनकी वाक्यों की भाषा में प्रवाह और स्फूर्ति के कारण काव्यात्मक तरलता से युक्त हो गयी है।

जैसा कि पीछे कहा जा चुका कि महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख चार स्तंभों में से एक प्रमुख कवयित्री हैं। इसलिए इनके गद्य की भाषा में भी वही छायावादी, भावशैली, भाषा शैली, काव्यात्मकता और तरलता दिखाई देती है। वह स्त्री थी। इसलिए वे किसी भी वस्तु, घटना आदि को एक स्त्री के नजरिए से देखा करती थी और उस अनुभव को अपने करुण—भावना के माध्यम से अभिव्यक्त करती थी। लयात्मकता, काव्यात्मकता और तरलता महादेवी की न सिर्फ पद्य भाषा की विशेषता है बल्कि उनकी गद्य शैली की भी विशेषता है। यह अकारण नहीं है कि महादेवी के गद्य को भी कहीं—कहीं गद्य काव्य की कोटि में समाहित कर लिया जाता है। यूं तो इनकी काव्य—योजना प्रायः दीर्घ और संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से युक्त है। अपने शब्द भण्डार के प्रत्येक शब्द को यथास्थान पिरोने में उनका जो सामर्थ्य था वह अद्वितीय था।

"आपके गद्य, पद्य की अपेक्षा अत्यन्त साफ और सुलझे हैं। उनके प्रत्येक वाक्य चिंतन की गहराई और अनुभूति की निष्ठा के साथ उभरता हैं"

महादेवी वर्मा की प्रौढ़ और प्रांजल भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी महत्वपूर्ण ढंग से हुआ है। इनके प्रयोग से महादेवी वर्मा की गद्य शैली में अनायास ही आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। इनके प्रयोग से एक तरफ लाक्षणिकता का आह्वान हुआ है तो दूसरी तरफ भाषा के अर्थ में गंभीरता भी

बढ़ी है। इनके गद्य साहित्य में जिस तरह से मुहावरों का प्रयोग हुआ है उसको कुछ उदाहरणों के माध्यम से देख सकते हैं–

(1) 'हाथ पीले करना' (स्मृति की रेखाएं – महादेवी, पृष्ठ 9)

(2) 'टेढ़ी खीर' (वही, पृष्ठ 11)

(3) 'दांतों तले उंगली दबाना' (वही, पृष्ठ 17)

कुछ नये मुहावरों की रचना भी की है।

(1) 'खोटे सिक्के की टकसाल' (वही, पृष्ठ 7)

(2) 'उदारता के डाइनामाइट' (वही, पृष्ठ 17)

कुछ लोकोक्तियां इस प्रकार हैं –

(1) 'प्यास के कंठ सुख गया और पसीने पर धूल की पर्त जम गयी।' (पथ के साथी, महादेवी, पृष्ठ 41)

(2) 'न वे मेरी चादर लम्बी कर पाते है।, न मुझे पैर सिकोड़ने पर बाध्य कर सकते है। (वही, पृष्ठ 52)

(3) 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' (स्मृति की रेखाएं, महादेवी, पृष्ठ 49)

(4) 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' (वही, पृष्ठ 51)

महादेवी वर्मा की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता में से एक उसकी अलंकृति में निहित है। संस्मरणात्मक गद्य में जहाँ भावोद्रेक और कल्पना का प्राधान्य है वहाँ उनकी भाषा काव्यमयी मधुरता से मुक्त तो है ही, उसमें अलंकारों की सहज रमणीयता भी विद्यमान है। चूँकि उनकी भाषा में शब्दगत

चमत्कृति और अर्थगत गौरव विद्यमान है इसलिए उनकी भाषा में शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का सहज प्रयोग मिलता है।

काव्य भाषा की तरह उनकी भाषा भी अलंकारगत रमणीयता से सुसज्जित है। राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है–

''ध्वनि, अलंकार जिस दृष्टि से भी देखिए भाषा को समृद्ध बनाने में कहावतों, मुहावरों का सबसे बड़ा हाथ है।''

महादेवी वर्मा की गद्य शैली में वर्णात्मकता की अपेक्षा चित्रात्मकता अधिक है। चित्रण चाहे बाहरी हो या आंतरिक सौंदर्य का, वह अपने सम्पूर्ण रूप में महादेवी के यहाँ अभिव्यक्ति पाता है। आधार पात्र मानों समग्र रूप में ही पाठक के सामने तैरने या गतिशील दिखाई पड़ने लगता है। जब वे सुभद्राकुमारी चौहान का शारीरिक वर्णन करती है, तो लगता है कोई चित्रकार चित्र बना रहा है। उन्होंने लिखा है–

''कुछ गोल मुख, चौड़ा माथा, सरल भृकुटियाँ, बड़ी और भाव स्नात आँखें, छोटी सुडौल नासिका, हँसी को जमा कर गढ़े हुए से ओठ और दृढ़ता सूचक ठुड्डी ... सब कुछ मिलाकर एक अत्यंत निश्चल कोमल, उदार व्यक्तित्व वाली भारतीय नारी का ही पता देते थे।'' इस तरह की भाषा पर पकड़ एक कवयित्री ही रख सकती थी। भाषा की समझ और पकड़ को 'पथ के साथी' में सहज रूप से देखा जा सकता है।

जहाँ तक शैली का प्रश्न है तो महादेवी वर्मा की गद्य शैली प्रायः वर्णन प्रधान शैली है इसी को कथात्मक शैली भी कहा जाता है। इस शैली में भावों का सम्प्रेषण करने में अत्यन्त सफल रही हैं। उनकी इस शैली में लयात्मकता

और नाटकीयता भी देखने को मिलती हैं। सुभद्राकुमारी के विषय में वर्णन करती हुई लिखती हैं–

''कृष्ण और गोपियों की कथा सुनकर एक दिन बालिका सुभद्रा ने निश्चय किया कि वह गोपी बनकर ग्वालों के साथ कृष्ण को ढूँढने जाएगी। दूसरे दिन वह लुकटी लेकर गायों और ग्वालों के झुंड के साथ कीकर और बबूल से भरे जंगल में पहुँच गई।''

महादेवी वर्मा के गद्य में चिंतन की गहराई और अनुभूति की निष्ठा भी दिखाई देती है जिसे वह एक कलात्मक आवरण में बाँध कर व्यक्त करती हैं। वे अपनी मूल बात को सीधे–सीधे ना कहकर एक लम्बी भूमिका के साथ विवेच्य विषय को अभिव्यक्त करती हैं। इसी कारण उनकी भाषा शैली विवेचनात्मक हो जाती है। उनके विवेचनात्मक गद्य में उपमान वाक्यों की सृष्टि करते हुए विचारों को बिम्बों और प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। निराला के व्यक्तित्व के विषय में उन्होंने लिखा है–

''प्रायः एक स्पर्धा का तार हमारे सौहार्द के फूलों को बेधकर उन्हें एकत्र रखता है। फूल के झड़ते या खिसकते ही काला तार मात्र रह जाता है। इसी में हमें किसी सहयोगी का बिछोह अकेलेपन की तीव्र अनुभूति नहीं देता। निराला जी के सौहार्द और विरोध दोनों आत्मीयता के वृत्त पर खिले दो फूल हैं।''

अपने संस्मरणों में वे विवेच्य विषयों के पात्रों के बीच उपस्थित रहती है। अतः संस्मरणों में संवाद और आत्मकथात्मक दोनों शैलियों को सहजतापूर्वक देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त अपने संस्मरणों के माध्यम से उन्होंने

समाज पर व्यंग्य भी किया है। जिसके कारण उनकी भाषा शैली में व्यंग्यात्मकता भी दिखाई देती है।

"उनके व्यंग्यों में यथार्थ का तीखापन है। इसीलिए इनसे हृदय मर्माहत हो उठता है। इसलिए जहाँ उन्होंने समाज के पाखण्डों पर व्यंग्य किया है, वहाँ हास्य की सृष्टि हुई है।"

'पथ के साथी' में महादेवी ने साहित्य जगत में चल रही स्पर्धा और उससे उत्पन्न निंदा पर व्यंग्य करती हुई लिखती हैं–

"साहित्य जगत में आज जिस सीमा तक व्यक्तिगत स्पर्धा, ईर्ष्या–द्वेष है, उस सीमा तक तब नहीं था, यह सत्य है, पर एक–दूसरे के साहित्य चरित्र स्वभाव संबंधी निंदा–पुराण तो सब युगों में नानी की कथा के समान लोकप्रियता पा लेता है।"

**सारांश**: अतः संक्षेप में कहना ठीक जान पड़ता है कि महादेवी वर्मा की गद्य शैली उनके व्यक्तित्व की भंगिमा का ही सजीव रूप है। उनके गद्य भाषा की उल्लेखनीय विशेषता उनकी स्वाभाविकता है। अतः उनकी गद्य शैली उनके कवि हृदय की तरह काव्यात्मक, चित्रात्मकता की प्रखरता और प्रांजलता के साथ उनके नारी मन की भावना से अविभूत होकर प्रस्तुत हुए हैं जिसके कारण उन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। उनका गद्य साहित्य अधिक संख्या में न होने के बावजूद भी अपने गुणों, विचारों और भावों के माध्यम से सुसज्जित है। जो साहित्य के लिए एक धरोहर की तरह है। जिससे आगे की पीढ़ी को एक सकारात्मक दृष्टि मिलती है।

# संदर्भ ग्रंथ सूची

## (क) आधार ग्रंथ –

1. वर्मा, महादेवी – पथ के साथी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2015

(ख) सहायक ग्रंथ –

1. ओ., जयश्री – महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य : एक पुनर्मूल्यांकन, संस्करण, 2012
2. महादेवी – अतीत के चलचित्र, भारती भण्डार प्रकाशन, इलाहाबाद, बारहवां संस्करण, 1972
3. महादेवी – स्मृति की रेखाएँ, भारती भण्डार प्रकाशन, इलाहाबाद, पंद्रहवां संस्करण, 1982
4. महादेवी – संस्मरण, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1984
5. महादेवी – साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, लोकभारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 1962
6. पालीवाल, कृष्णदत्त – नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचना कर्म – स्त्री विमर्श के स्वर, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2010

7. दीक्षित, सूर्यप्रसाद – महादेवी का गद्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रकाशन, संस्करण 2007

8. सांकृत्यायन, कमला – राहुल वाङ्मय, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1994

9. शुक्ल, रामचन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास,

10. शर्मा, चरनसखी – महादेवी का संस्मरणात्मक गद्य, शोध–प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1978